ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

वर्तमान युग में गांधीवाद की सार्थकता

डॉ. राणी आन्टणी

Kakkasheril (H),

Memmury P.O., Kottayam, Dist, Kerala (St)

महात्मागांधी के विचार, दर्शन और सन्देश वर्तमान के लिए बहुत सार्थक है। सत्य और अहिंसा पर आधारित मानवधर्म की संस्थापना के लक्ष्य से अभिषिक्त विचारधारा गॉधीवाद के नाम से सर्वस्वीकृत है। बींसवी शताब्दी में भारतीय चिन्तंन के क्षेत्र में इसका विशिष्ट महत्व है। आज स्थायी मान्यताएं जैसे सेवा, त्याग और दुसरो के लिए सहिष्णुता बहुत तेजी से समाप्त होती जा रहीं है और उनका स्थान लालच, अवसरवाद, धोखा और चालाकी के द्वारा लिया जा रहा हैं। इन सबने द्वंदों और संघर्षो को जन्म दिया है। सहिष्णुता तथा मानवप्रेम के उच्च्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस प्रकार के वातावरण में गांधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गांधीजी के महत्वपूर्ण आदर्श सूत्र एवं सिद्धांत और मूल्य मानवता को आंतरिक एवं बाह्य अमर शांति की मंजिल तक पहुंचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गांधीजी के प्रयोगो ने उनके इस विश्वाश को पक्का कर दिया था की असत्य के मार्ग पर चलते हुए सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। यह ठीक है की लौकिक जीवन में अनेक बार असत्य की विजय का आगास होता है। किन्तु अंतिम विजय तो सत्य की ही होती है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधीजी की दृस्टि में सत्य ईश्वर का दूसरा रूप है। उनके अनुसार "परमेश्वर सत्य है यह कहने की अपेक्षा सत्य ही परमेश्वर है कहना अधिक योग्य है।" उनका विस्वाश था की आत्मा जो ब्रह्म का अंश है, सत्य की आराधना करते हुए इस महान सत्ता में विसर्जन कर सकती है। सत्य प्राप्ति का मार्ग अत्यंत कठिन और दुर्गम है। इस पर चलना तलवार की धार पर अपने को संतुलित करने के सामान कठिन है। इस पथ की यात्रा करने वाला सत्य शोधक जरा से असावधानी से ही प्राणो को गँवा सकता है। अतः यह मार्ग केवल वीरो के लिए ही है, इसमें कायरता के लिए कोई स्थान ही नहीं है।

सत्य और अहिंसा गांधीजी की समस्त विचारधारा की मूल धूरि है। वे सत्य और अहिंसा को परस्पर साध्य और साधन तथा ईश्वर के समकक्ष समझते थे। अहिंसा सक्रीय और भावनात्मक पक्रिया है। हिंसा असत्य है, क्योंकि यह जीवन की एकता की विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शांति दुनिया में तभी स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। असत्य का प्रतिकार करने के लिए गांधीजी समझाना-बुझाना, सविनय अवज्ञा, उपवास या धरना, प्रार्थना आदि अनेक रूपों का प्रयोग करते हैं। वर्त्तमान में भी व्यक्तिगत जीवन सार्वजानिक जीवन और अंतराष्ट्रीय सम्बन्धो में इस शस्त्र की शक्ति से ही बड़ी बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती है।

गांधीजी के धर्म का केंद्र बिंदु नैतिकता में गहरा विस्वाश था। गांधीजी का धर्म परम्परा अथवा गुरु से प्राप्त संगठित धर्म नहीं वर्ण संकीर्ण - मतवादिता एवं साम्प्रदायिकता की छाया से मुक्त शास्वत जीवन - मूल्यों एवं नैतिकता का पर्याय है। सभी धर्मो में कुछ न कुछ सत्य अवश्य रहते हैं। सभी धर्मो के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। गांधीजी अपनी समन्वयात्मक प्रवृति के कारण विभिन्न धर्मो के 'सत्य' को ग्रहण करते हैँ। गांधीजी की अद्वित्य देन है की उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद का समन्वय किया। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का यह लक्ष्य है, गांधीजी अमीरो से धन छीनकर गरीबों में बाँटने में विश्वास रखते थे। वे अमीरो के फालतू धन को अमीरो द्वारा समाज के भले के लिए ट्रस्ट में रखना चाहते थे। गांधीजी

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

का यह विचार आजकल बहुत सार्थक है क्योंकि मार्क्स के प्रकार के समाजवाद की स्थापना या पूंजीवाद को नष्ट करना संभव नहीं है, ट्रस्टीशिप के सिद्धांत द्वारा गाँधीजी ने समाजवाद और पूंजीवाद के बीच का एक रास्ता निकाला। गांधीजी की स्वदेशी भावना स्वावलम्बन व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण व्रत है। उन्होंने मशीनीकरण का विरोध किया। उनकी राय में भारतीय अर्थव्यवस्था को बर्बाद करने में पश्चिमी सभ्यता द्वारा विकसित मशीन उत्तरदायी है। बेरोजगारी इसका परिणाम स्वरूप है। अतः वे कुटीर उधोगो को प्रोत्साहन देते थे। केंद्रीयकरण से शोषण और असमानता का प्रसार होता है। अतः उन्होंने आर्थिक समानता की स्थापना के उद्देश्य से उत्पादन के साधनो का विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया । धन की संरक्षणता के सिद्धांत समाज के कल्याण के लिए व्यय काने का सुझाव प्रदान करता है। गांधीजी का यह दृषिकोण मानवीय जाति को स्वदेशी का मूलमंत्र देकर वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को यथार्थ स्वरुप प्रदान करता है । इस सम्बन्ध में गांधीजी का सिद्धांत सर्वत्र प्रासंगिक है।

गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचार भी आज भी बहुत सार्थक हैँ वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषो के परिहार के लिए उन्होंने बुनियादी शिक्षा प्रणाली नामक एक नविन शिक्षा पद्धति को देश के समक्ष प्रस्तुत किया । इस पद्धति में बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास का उचित अवसर प्रदान किया जाता है। बौद्धिक विकाश के लिए गांधीजी प्रारम्भ में मौखिक शिक्षा के रूप में बालक को पर्याप्त मात्रा में सामान्य ज्ञान कराने के पक्ष में थे। फिर उसे चित्रों द्वारा भाव को व्यक्त करने की कला सिखाना और तत्पश्चात वर्णो का ज्ञान कराना उचित समझते थे। उनके अनुसार "मैंने हर हालत में अक्षर ज्ञान की निंदा की है। मैंने इतना ही दिखाया है की हमे उसकी मूर्तिपूजा नहीं करनी चाहिए" वह हमारी कामधेनु नहीं है।

'अध्यनशील जीविका कमाओ जोकि उनकी बुनियादी शिक्षा का केंद्रीय सिद्धांत है, आज भी हमारी शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर सकता है, शिक्षा की यह योजना सर्वत्र प्रासंगिक और सदैव के लिए सार्थक है।

इस प्रकार हमे यह तथ्य स्वीकार करना है की समाज के सामने आनेवाली समस्याओं पर उनकी पैनी दृष्टि मानवजाति को इस्पात की एड़ियों से कुचलने की सम्भावना रखते हैं। जोकि समाज के दुर्बल वर्गों, दलितों और महिलाओं के उद्धार के लिए विचार प्रकट करने में सक्षम सिद्ध हुए हैं। उनके विचार और दर्शन आज भी सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक हैं।

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

१. गाँधी साहित्य : भाग - १ - धर्मनीति, पृ. ८९

२. नयी तालीम की ओर - गांधीजी : भारतंन पृ. ४४